गुरु नानक - सबद ७५

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५३

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥
जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥
आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥
बाबा अलहु अगम अपारु ॥
पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥
जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥
कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥
पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥
सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥
बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥
पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥
आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥
सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥
जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥
अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥
वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥
वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥
हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥
सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥
केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥
नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥

सार: मन जो दोहराता है उस पर वह विश्वास करने लगता है। जो वह अनुभव करता है, उसे वह देखने लगता है और जो वह ग्रहण कर समझता है उसे वह सत्य कहने लगता है। हम जो भी विचार व्यक्त करते हैं वह मन में अपनी उपस्थिति को और मज़बूत करता है और गूंजता रहता है, अंततः यह दुनिया को देखने के हमारे नज़रिए को आकार दे देता है। हमारी धारणा तटस्थ नहीं होती, यह उन प्रतिमानों को प्रतिबिम्बित करती है जिन्हें हम अपने भीतर पोषित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति लगातार कृतज्ञता व्यक्त करता है, तो उसका मन छोटे-छोटे विवरणों में भी आशीर्वाद को देखना शुरू कर देता है। इसके विपरीत, यदि कोई लगातार शिकायतों को दोहराता है तो मन हर जगह दोष और कमियों को प्रमुखता से देखने लगता है। इस प्रकार, समझ केवल पूर्ण सत्य के बारे में नहीं होती बल्कि यह हमारी व्याख्याओं के दर्पण के समान होती है। जब हम अपने इरादों को सचेत रूप से चुनते हैं तो हम उसी दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं जिसके माध्यम से हम जीवन का अनुभव करते हैं।

आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥
हम जो व्यक्त करते हैं और जिस विचार की पुष्टी बार-बार करते हैं, वह विचार मन में प्रतिध्वनित होता है। जो कुछ भी वह देखता है और ग्रहण करता है, उसे ही प्रस्तुत करता है। यह अभिव्यक्ति दर्शाती है कि हमारी समझ हमारी व्याख्याओं और अनुमोदन का प्रतिबिंब है।

जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥
हम किसके बारे में अपनी धारणाएँ प्रस्तुत करते हैं, वह कितना व्यापक, विशाल है और वह कहाँ स्थित है? यह बताता है कि हम अक्सर सर्वव्यापक शक्ति की ओर अपनी भक्ति केंद्रित कर लेते हैं परंतु उसके सार को ठीक से समझ नहीं पाते।

आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥
जो लोग इसके बारे में चर्चा करते हैं, वह अक्सर इस पर विचार करते समय चुप हो जाते हैं। यह याद दिलाता है कि सत्य केवल एक अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि गहन चिंतन के माध्यम से की जाने वाली एक खोज है। (१)

बाबा अलहु अगम अपारु ॥

हे ज्ञानी ! यह सर्वव्यापक शक्ति हमारी समझ से परे है और असीम है।

पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥

वह नाम पवित्रता का प्रतीक है, वह स्थान पवित्रता बिखेरता है जहाँ ईमानदारी है क्योंकि वही हमारे अस्तित्व के सार का पोषक है। (१)(विराम)

तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥

प्रकृति का नियम किसी की बौद्धिक समझ से परे है यदि सौ कवि भी एक साथ मिलकर प्रयास करें तब भी वह इसके सार का एक कण भी नहीं पकड़ पाएँगे, जिससे वह निराशा महसूस करेंगे।

जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥

प्रकृति का नियम किसी की भी बौद्धिक समझ से परे है, यह अथाह है और इसे लिखकर या गणना करके नहीं समझा जा सकता।

कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥

कोई भी इसकी वास्तविकता के सार को समझ नहीं पाया है, सभी केवल सुनते हैं और जो सुना है उसे दोहराते रहते हैं । (२)

पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥

संत, दूत- पैग़म्बर, साधू, संतुष्ट, सीधे-सादे और शहीद।

सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥

धार्मिक विद्वान, रहस्यवादी, धार्मिक न्यायाधीश और पुजारी, ज्ञानोदय के द्वार तक पहुँचने के लिए प्रयासरत साधक हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सभी रास्ते की खोज में हैं लेकिन वह जागरूकता प्राप्त करने का कोई आश्वासन नहीं देते।

बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥

जो लोग भविष्य की समृद्धि की इच्छा रखते हैं वह धार्मिक अनुष्ठानों और प्रार्थनाओं के पाठ में लीन रहते हैं। यह उस भक्ति की आलोचना है जो प्रेम से नहीं बल्कि अपेक्षा से प्रेरित लेन-देन वाली भक्ति है जो लाभ की आशा से प्रेरित होती है। (३)

पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥

बिना किसी से पूछे वह सृजन करता है, बिना पूछे वह विनाश करता है। बिना मांगे वह देता और लेता भी है। प्रकृति की यह अंतर्निहित शक्ति एक गहन सत्य को प्रकट करती है कि सार्वभौमिक नियम सभी सीमाओं से परे हैं।

आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥

अपनी रचना के प्रति जागरूक, वह स्वयं का सृजन और मूर्त रूप धारण करता है। यह जागरूकता अस्तित्व के सार को सुदृढ़ करती है जिसके भीतर कारण, प्रक्रिया और परिणाम, तीनों एक ही ताने-बाने में गुँथे हुए हैं।

सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥

वह सर्वव्यापी ऊर्जा पूरी सृष्टि को अपनी कृपा दृष्टि से पोषित करती है और जीवन के प्राकृतिक प्रवाह के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए उसका भरण-पोषण करती है। (४)

थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥

इस सर्वव्यापी ऊर्जा की सत्ता का स्थान अज्ञात है। इसके अनेक नामों में से इस स्थान का नाम क्या है? यह प्रश्न उस ऊर्जा की अंतर्निहित एकता को उजागर करता है जो नामों और स्थानों की सीमाओं से परे है।

जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥

जहाँ यह सर्वोच्च सत्ता निवास करती है, वह कौन सा स्थान है?

अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥
जब कोई भी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा है तो मैं किससे पूछूँ? यह अलंकारिक प्रश्न केवल बाहरी स्रोतों पर निर्भर रहने के बजाय आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करता है। (५)

वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥
जाति, वर्ग या रंग प्रभावशाली नहीं होते, भले ही वह किसी को श्रेष्ठ ही क्यों न महसूस कराते हों। यह स्वीकार्यता दर्शाता है कि मूल्य व्यक्ति के चरित्र और कार्यों में निहित है, किसी भ्रमित उपाधि में नहीं।

वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥
महानता उस अनंत सर्वव्यापक शक्ति के हाथों में है। जो इस प्राकृतिक इच्छा का सम्मान करते हैं वह उसके महत्व का वास्तविक सार प्राप्त करते हैं।

हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥
जो लोग प्रकृति की इच्छा को स्वीकार कर उसके साथ चलते हैं वह क्षणभर भी विलंब नहीं करते। यह उन लोगों का प्रतीक है जो प्रकृति के साथ तालमेल में चलते हैं, विरोध में नहीं और अपने अस्तित्व को तुरंत सामंजस्य में लाते हैं। (६)

सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥
हर कोई सर्वव्यापी की विशालता और महानता का एक दाता के रूप में गुणगान करता है। वह ऐसा अक्सर कुछ पाने के इरादे और इच्छा से करते हैं जिससे उनकी सशर्त भक्ति और प्रशंसा के पीछे की असत्यता उजागर होती है।

केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥
कितनी विशाल है वह देने वाली शक्ति जो निरंतर प्रदान करती रहती है और जिसकी उदारता को मापना असंभव है। यह प्रकृति के उन अनंत स्रोतों की ओर संकेत करता है जो जीवन को पोषित कर क़ायम रखते हैं।

नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥

नानक कहते हैं तुम्हारे खजाने में कोई कमी नहीं है वह युगों-युगों तक भरा रहता है। यह इस बात की पुष्टि है कि प्रकृति की समृद्धि कभी घटती नहीं क्योंकि यह समय के साथ निरंतर उत्पन्न होती है, बनी रहती है, पोषण करती है और स्वयं को नवीनीकृत करती रहती है । (७)(१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि पवित्रता केवल एक बाहरी धारणा नहीं है; यह सृष्टि की कंपन में निहित है। ईमानदारी एक अद्वितीय आभा पैदा करती है जो छल-कपट से अछूती रहती है। यह पवित्रता बाहरी स्रोत, साधन या कर्मकांडों से नहीं बल्कि आंतरिक सत्यनिष्ठा और आत्म-चिंतन से उत्पन्न होती है। विचारों और इरादों की यह आंतरिक निर्मलता हमें पोषण देती है, हमारे मन को स्पष्ट और स्थिर बनाए रखती है। जब हम ईमानदारी में स्थिर रहते हैं तो यह प्रकाश स्वाभाविक रूप से हमारे भीतर प्रकट होता है चाहे हमारा वर्ग, पद या लिंग कुछ भी हो। ईमानदारी से साधारण स्थान भी पवित्र हो जाते हैं जबकि छल-कपट सबसे पूजनीय स्थानों की पवित्रता को भी क्षीण कर सकता है। पवित्रता और ईमानदारी को अपनाने से हम उस सार से जुड़ जाते हैं जो समस्त जीवन को धारण करता है और हमें सच्चे अर्थों में समृद्ध व सक्षम बनाता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com